(परमसन्त महात्मा रामचंद्र जी महाराज द्वारा अपने एक प्रेमी जन को लिखा गया पत्र - रामाश्रम सत्संग प्रकाशन " अमृत रस " से साभार)

अज़ीज़े मन,

तुम्हारा खत मिलने से इस वक्त तक का ज़माना तक़लीफ़ों में गुज़रा है . मैं और मेरा तमाम ख़ानदान बीमार रहा . जिस लड़की की पारसाल शादी हुई थी और मेरी नवासी का इंतक़ाल ख़ास वाक़यात हैं. जहां तक मेरी समझ है और जिस क़दर मैं तहरीरी तौर पर इज़हार करने का माद्दा रखता हूँ बहुत मुख़्तसिर अल्फ़ाज़ में आपके ख़त का जबाब देने की कोशिश करता हूँ .हालांकि इस मामले में तहरीर और तक़रीर दोनों को आजिज़ पाता हूँ और उम्मीद नहीं है कि वह मतलब को पूरे तौर पर हलक़ के अन्दर उतार दे. मुझे आपके ख़त को देखकर यह ताज्जुब हुआ की बहुत ज़्यादा हिस्सा ख़त का आपके सवालात का जबाब है.

नहीं मालूम कि आम लोगों ने ख़ुदा और रूह को क्या समझ रखा है. मेरी समझ में जो शख्स की ख़ुदा के बाबत गुफ़्तगूं करता है और उसकी हक़ीक़त को तलाश करने वाला है वह रूह है और जिसकी उसको तलाश है वह ख़ुदा है .अगर ऐसा नहीं है तो न तो वह इंसानी रूह और न कोई उसका ख़ुदा है. चूंकि जानवरों का चलना -फिरना, ज़िंदा रहना भी एक रूहानियत है और इंसान की भी - फर्क दोनों में सिर्फ कांशसनेस का है जिस क़दर कि जिस शख्स की क़ुब्बते तमीज़ी ज़्यादा है उसी क़दर उसकी रूहानियत साफ़ है. इन्सान की तमीज़ी क़ुब्बत ही इस बात की दलील है की वह अपने सिवाय किसी दूसरी वास्तु को देखता, जानता और समझता है और अपनी मौजूदा हालत से ज़्यादातर जानने, देखने और समझने की हज़ारों तरह पर कोशिश करता है और करता रहेगा. वह यह समझता है कि मैं कुछ हूँ और यह भी समझता है कि मेरे अलावा दूसरी चीज़ भी है और यह भी समझता है कि मेरे और दूसरी चीज़ के समझने और तमीज़ करने कि क़ुब्बत भी दरम्यान में है . इससे कोई इंकार नहीं कर सकता. अगर यह दरम्यानी क़ुब्बते तमीज़ी हर शख्स में न होती तो वह हरगिज़ न अपने को समझता न दूसरों को. पस जो कुछ भी असल है वह क़ुब्बते तमीज़ी है. क़ुब्बते तमीज़ी के दर्ज़े और मरतबे हैं . मिट्टी और पत्थर के मुक़ाबिल दरख्तों और घास में क़ुब्बते तमीज़ी और दरख्तों के मुक़ाबले जानवरों में, और जानवरों के दरम्यान बाज़ बाज़ बाज़ खास जानवरों में और फिर जानवरों के मुक़ाबिल ज़ाहिल आदमियों में, जाहिल आदमियों के मुक़ाबले ज़ाहिर आलिम आदमियों में और फिर ज़ाहिर आलिम आदमियों के मुक़ाबले बातिनी आलिमों में और बातिनी आलिमों में और बातिनी आलिमों के मुक़ाबिल अमल करने वाले लोगों में . यह सब तमीज़ी कुब्बतें अपनी अपनी हैसियत और दर्ज़ों के मुताबिक़ रूह हैं और जो चीज़ कि तमीज़ की जाती है वह भी अपने अपने दर्ज़े के मुताबिक़ उसका ख़ुदा -- एक हैसियत से रूह है और दूसरी हैसियत से ख़ुदा. इसके अलावा कुछ नहीं. यही रूह है और यही ख़ुदा की हस्ती. मैं और आप जुज़वी ज्ञान हैं और ख़ुदा मुकम्मिल ज्ञान बल्कि ज्ञान स्वरुप. जहाँ रूह का सवाल आता है वहां ज़रूरी ख़ुदा का सवाल आकर मौज़ूद हो जाता है. अगर रूह और ख़ुदा का सवाल न पैदा हो वहाँ भी बज़ाताहू रूह और ख़ुदा मौज़ूद हैं. मतलब

यह है कि चाहे कोई आस्तिक हो या नास्तिक, रूह और ख़ुदा ज़रूर मौजूद हैं. अलबत्ता जानवरों की मानिन्द अगर किसी शख्स में इस क़दर रौशनी तमीज़ की गुम हो गयी है कि वह अपने आपको किसी दूसरी चीज़ से तमीज़ नहीं कर सकता तो यह नहीं कहा जा सकता कि रूह और ख़ुदा मौजूद नहीं हैं. (बल्कि यह कहा जायेगा कि उसमें क़ुव्वते तमीज़ी बिलकुल नहीं है) चमगादड़ अगर आफ़ताव को न देख सके तो अफताव की अदम मौजूदगी नहीं साबित हो सकती. (बल्कि यह कहा जायगा कि चमगादड़ आफ़ताब को नहीं देख सकता) सितारे आफ़ताब की रौशनी में दिखाई नहीं देते मगर न दिखाई देने से उनकी हस्ती से इनकार नहीं हो सकता. अगर किसी औज़ार और आले के ज़रिये से किसी शख्स की विसारत (देखने की शक्ति) में यह क़ुब्बत हो सके कि वह सितारों को आफ़ताब कि रौशनी में भी देख सके तो यह खास बात होगी और वह ऐनुल-यकीन (पूर्ण विश्वास) के दर्ज़े तक पहुंचेगी कि आफ़ताब की रौशनी में भी उसने सितारों को देख लिया जो दूसरे बाकी लोग नहीं देख सकते थे. ख़ुदा और रूह कोई विज़िबल (दिखाई देने वाली) चीज़ नहीं हैं जो देखे जा सकें . अलबत्ता इल्म के अहाते थोड़ी बहुत आ सकती है. जैसा और जिस वक्त और जिस हैसियत का उसका इल्म होगा, जैसा कि ऊपर बयान किया गया है, वैसा ही उसका अनुभव (realisation) होगा. realisation इसी का नाम है, बाकी ढकोसले बाज़ी है. और ऊपर के बयान को राउंड अबाउट एक्सप्लनेशन भी समझ सकते हैं और हक़ीक़त भी . जैसी आपकी समझ हो . दूसरी तरह पर असली समझ कशफ़ी (प्रभु की कृपा द्वारा) हो सकती है जिसमें दलील की हाजत नहीं . कशफ़ी तौर पर समझा देना ऐसा है जैसा कि रामकृष्ण परमहंस जी ने स्वामी स्वामी विवेकानंद को कराया था. लेकिन मैं तो रामकृष्ण परमहंस नहीं हूँ, मुमकिन है कि आप विवेकानंद हों. रामकृष्ण परमहंस वाक़ई गुरु कहलाने के क़ाबिल थे और ऐसा ही गुरु होना चाहिए. लेकिन ग़ालिबन सिर्फ एक ही विवेकानंद जी ऐसे चेले भी थे, बाक़ी सब ऐसे हुए जो बतअदरीज (शनैः शनैः) इस मामले को पहुंचे होंगे. इस लिहाज़ से स्वामी परमहंस जी को भी न मालूम किस क़दर तादात को अर्से तक लटकाये रखने और धोखा देने के जुर्म के मुर्तकिब (दोषी) होते रहे. इस फ़क़ीर की तो गिनती ही क्या है ?

मैं इकरार करता हूँ कि अपनी मौजूदा हालत और अक़ीदे के मुआफ़िक मैं अनुभव (realise) कर चूका हूँ कि ख़ुदा भी है और रूह भी है और अभी नहीं मालूम कि ज्ञान कहाँ जाकर ठहरेगा और कहाँ इसका ठिकाना होगा. क्योंकि मुक़्क़मिल ज्ञान परमात्मा में ही है न कि रूह में., और जब यह सूरत है तो नाचीज़ रूह की क्या मज़ाल है कि perfect realisation (मुक़्क़मिल ज्ञान) का दावा कर सके. आपको अख्त्यार है कि ऐसे मुक़्क़मिल आदमी को आप अगर चाहें तो तलाश कर लें.

मैं मुक़्क़मिल गुरु होने का दावा नहीं कर सकता. प्राइमरी स्कूल का सबसे नीचा मुदर्रिस अपनी ज़ात से किसी अलिफ़ बे पढ़ने वाले को धोखा नहीं देता. एक गुरु और मुदर्रिस तो M.A. क्लास को पढ़ाता है और एक प्राइमरी स्कूल के सबसे नीचे ' C' सेक्शन को. अगर बतदरीज (क्रमश) कशफ़ी तौर पर तालीम हासिल करने को आप रज़ामंद हों तो वक़्त को आप सर्फ़ कीजिय . ख़्याली मनसूबों से क्या हो सकता है. ज़ाहिरी इल्म के हासिल करने में आपको किस क़दर मेहनत, वक़्त, तंदरुस्ती, रुपया खर्च करना पड़ा. उस वक़्त की आपकी उमर भी इस पुख्तगी को नहीं पहुंची थी जो इन मामलात को समझने के क़ाबिल होती और उसके बाद इस बक़्त तक अपने कोई अमली कोशिश नहीं की. दूसरी बातों की तरफ़ तवज्जह का रुख़ रहा है.

मैं आपकी तहरीर को मौहब्बत की निगाह से देखता हूँ. इसमें आप दरियाफ़्त हक़ीक़त कर रहे हैं. इसमें बुरा मानने की क्या बात है .आपका ख़त का लिखना और दरियाफ़्त करना मुहब्बत की अलामत है और ईमान की रौशनी की मौज़ूदगी साबित करता है. वरना गेर शख्स को ऐसी क्या ज़रूरत पड़ी थी जो मुझको लिवखता. वाक़ई मेरी नियत लोगों को धोखा देने की नहीं है, न सब लोग जो आते हैं धोखा देते हैं क्योंकि साल भर के क्लास में पढ़ने की मुद्द्त धोखाबाज़ी शुमार नहीं की जा सकती .अगर क़ामयाबी किसी तरह नहींहोती तो अलबत्ता न पढ़ने की शिकायत हो सकती है. इसी तरह क़ुब्बते तमीज़ी (विवेक शक्ति) की सफाई हासिल करने और उससे ज़्यादे ताक़त बढ़ाने की कोशिश में जो मुद्द्त सर्फ होती है वह इम्तिहान के वक्त तक आने के लिए तालीम की हैसियत ख़्यालकी जाती है न की वक्त ख़राब करने की और धोखेवाजी की. अगर लोगों ने मेरी तालीम को जज़्ब (ग्रहण) नहीं किया तो यह मेरे तर्ज़-तालीम (शिक्षा) की ख़राबी शुमार की जा सकती है या मेरी ख़ामी (कच्चेपन) की. और दूसरें लिहाज़ से तालिबइल्मों (साधकों) की कमी तवज्जो और slackness (बेपरवाही) की है. आपने कुम्भ में मुझको तलब किया. सरकारी काम की वजह से आप दौरे चले गए. आपकी गैरमौज़ूदगी में मैं दूसरे शख्स के यहां ठहर गया आप वापिस आ गए और मैं कई रोज़ तक ठहरा रहा. आप क्यों मेरे पास तक नहीं आये.? इसमें आपका क़सूर है या मेरा.? आपको मेरे पास आकर कहना चाहिए था की मैं दौरे से वापस आ गया हूँ, अब मेरे पास चलो.

तहक़ीक़ात और असलियत समझने के किये आमतौर पर दो तरीक़े हो सकते हैं (१) जो दुनियां की हर चीज़ को देखकर, समझकर और उससे तज़ुर्बा हासिल करता हुआ चले और फिर material world यानी माद्दी दुनियाँ की हर चीज़ की तहक़ीक़ात ख़तम करके spiritual world (रूहानी संसार) की तरफ़ मुँह मोड़ ले. (२) या दूसरी तरह पर material world की तरफ़ से आँख मीच ले और spiritual world की तरफ़ चल पड़े.

दुनियां की हर चीज़ से ताल्लुक़ करने से तज़ुर्बा होता है . पस जी शख्स इस तरह पर दुनियांदार हो की वह पहले अपने आपको दुनियांदार मुक़्क़मिल साबित कर दिखावे तब वो वाक़ई दूसरी तरफ़ पलटेगा. पस मुमकिन है कि श्रीकृष्ण इस रास्ते को पसंद करता हो और यही रास्ता उसने अख्त्यार किया हो. जब वह मुक़्क़मिल दुनियादार हो जायेगा, पलट पड़ेगा. अगर आपने इस तरीक़े निहायत बुरा समझा हुआ है तो आप इसके बरख़िलाफ़ रास्ता अख़्त्यार कीजिये , यानी दुनियाँदार न बनिये और यही रूहानियत और खुदा-परस्ती है . वाक़ई यह है कि मेरी तालीम दुनियाँदारी सिखाती है. अगर इन्सान मुक़्क़मिल इन्सान नहीं बन सकता तो वह ख़ुदा को नहीं देख सकता और न ही अपनी समझ उसको आ सकती है. अगर मुक़्क़मिल दुनियांदार बन गया तो वह इस क़ाबिल हो सकता है कि अपने आपको समझ सके और ख़ुदा को देख सके.

दुनियांदार वही है जिसका मन दुनियाँ की चीज़ों में आनंद पाता हो. जब दुनियाँ की हर चीज़ में मन लगाकर आनन्द हासिल कर लेगा और असली आनन्द उसमें न पावेगा तो फिर दूसरी चीज़ को पकड़ेगा और इसी तरह पर हर चीज़ को लेता जावेगा और छोड़ता जावेगा. आख़िरकार वह उस चीज़ पर पहुँचेगा कि जिसमें हमेशा का आनन्द होगा और वही ख़ुदा है. पस अगर कोई शख़्स बावजूद समझाने के इस तरीक़े पर चलने को रज़ामंद न हो और सहल तालीम को

क़बूल न करे तो मेरी तालीम का सिर्फ़ इस क़दर क़सूर है कि उसमें ज़ोर नहीं है. लेकिन तालीम की शकल तो बाक़ई हक़ीक़ी तालीम की है.

सालना भण्डारे की हक़ीक़त एक मुज़ाहिरा (दृश्य) है जिसमें लोग एक दूसरे से ख़्यालात का तबादला करते हैं और आइन्दा तरक़्क़ी का ज़रिया सोच लेते हैं , इससे ज़्यादा कुछ नहीं .

आपने यह कैसे समझ लिया कि सब तादाद नाक़ाबिल जमा होती है और सब बेहूदा लोगों की मजलिस है. दूर बैठे हुए बदगुमानी पैदा कर लेना जायज़ नहीं है. ख़ुदा ज़रूर है और एक है. अगर मैं और आप उसको देख सकें तो वह ख़ुदा नहीं है बल्कि कोई material (मायावी) चीज़ है. इन्तहाई अक़्ल इन्सानी (मनुष्य की बुद्धि की पराकाष्ठा) को रूहे इन्सानी (जीवात्मा) कहते हैं और यह तमीज़ की मेरी अक़्ल किसी दूसरे के मुक़ाबिल निहायत आजिज़ और हक़ीर (नम्र व तुच्छ) है , ऐन ताबेदारी ख़ुदा की है क्योंकि एक तरफ़ हक़ीर चीज़ अक्ले-इन्सानी (मनुष्य की बुद्धि) है जो रूह कहलाती है और दूसरी तरफ़ कामिल अक़्ल और ज्ञान (सर्वज्ञता) है जो ख़ुदाइयत (ईश्वरत्व) है.

आपकी ख़ुशी है कि अब आप नास्तिक हों या आस्तिक रहें क्योकि अगर आप नास्तिक होंगे तो किसके मुक़ाबिल. वहरलाल आस्तिक होने का बरख़िलाफ़ (प्रतिकूल) ख़्याल आपके इल्म में बाक़ी रहेगा. बहतर तो यह है कि आप न आस्तिक हों न नास्तिक तब तो ख़ैरियत है. हमारे यहाँ ख़ुदा को न मानने वाले को नहीं कहते बल्कि उसको नास्तिक मानते हैं जो कर्म, मन और वचन से ऐसे काम और ख़्यालात का इस्तेमाल करता हो जिससे अपनी spiritual, intellectual, mental and physical bodies .(आत्मिक, बौद्धिक, मानसिक, एवं शारीरिक तत्वों) का नुकसान होता है और बर्बाद होते हैं और जिन कामों और ख़यालात से दूसरों पर ऐसे असर पड़ते हैं जिनसे वो बर्बाद हो जाएँ, और आस्तिक उसके बरख़िलाफ़ .पस अगर दिल वगैरह सब ऐसे हैं कि जो अपने किसी शरीर को बर्बाद न कर सकें तो आदमी चाहे नास्तिक हो या आस्तिक कुछ परवाह नहीं. आप अभी सब कुछ हैं और सब क़ाबिलियत आपके अन्दर मौजूद है. रूह आपके अन्दर, ख़ुदा आपके अन्दर, सिर्फ़ इस वहम को दूर कर लेने की ज़रूरत है कि ख़ुदा है या नहीं, रूह कोई चीज़ है या नहीं. अगर यह दूर हो जाये तो गुरु वग़ैरह की हाजत (आवश्यकता) नहीं - गुरु तो सिर्फ़ इस वहम को दूर कराने की फिक्र करते हैं. अगर कोई शख़्स ख़ुद ही गुरु है तो फिर उसको हर चीज़ हासिल है. बहम का इलाज बहम से होता है. ख़ुदा और रूह की तलाश बाक़ई कुदरती है और यही जहालत (मूढ़ता) और वहम (भ्रम है.